Krishna Nand B.A I Hons (1) Freud का सिद्धांत continue

इन प्रतीकों के अर्थ को समझने हेतु इनके वास्तविक अर्थ, जो गुप्त होते हैं, को समझना होगा। फ्रॉयड के अनुसार स्वप्न के विषय दो तरह के होते हैं-

(क) व्यक्त विषय (Manifest Content) स्वप्न के व्यक्त विषय के अंतर्गत वे सारी बातें आती हैं। जिन्हें स्वप्न द्रष्टा (Dreamer) प्रत्यक्ष रूप में देखता है और जागने पर वर्णन करता है। स्वप्न के व्यक्त विषय का विश्लेषण करने पर ही स्वप्न के गुप्त या अव्यक्त विषय यानी स्वप्न के वास्तविक अर्थ को जाना जाता है।

(ख) अव्यक्त या गुप्त विषय (Latent Content) स्वप्न के व्यक्त विषय का विश्लेषण करने के फलस्वरूप अचेतन की जिन इच्छाओं का पता चलता है, वे ही स्वप्न के अव्यक्त विषय होते हैं।

स्वप्न के विषयों के उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि व्यक्त विषय स्वप्न के गुप्त विषय के स्थानापन्न होते हैं, जो अचेतन के वास्तविक विचारों के बिगड़े हुए या अयथार्थ और प्रतीकात्मक स्वरूप के होते हैं। जबकि स्वप्न के गुप्त या अव्यक्त विषय उसके वास्तविक या यथार्थ रूप होते हैं।

स्वप्न कार्य (Dream Work)

स्वप्न के आधारभूत 'गुप्त या अव्यक्त' विषय प्रायः कामुक स्वरूप के होते हैं, जो चेतन प्रतिबंधकों की प्रतिरोध के कारण सहज रूप में व्यक्त नहीं हो पाते हैं। अतः ये गुप्त विषय वेश बदलकर प्रकट होते हैं। अर्थात् स्वप्न के गुप्त विषय के वास्तविक का अवास्तविक रूप में परिणत होकर व्यक्त होते हैं। गुप्त विषय के अवास्तविक या छद्म रूप में परिवर्तित

Krishna Nand B.A I Hons Freud का सिद्धान्त continue

होने की क्रिया को ही 'स्वप्न कार्य' की संज्ञा दी जाती है। ब्राउन (Brown) ने स्वप्न कार्य की परिभाषा इस प्रकार दी है। "फ्रायड के अनुसार स्वप्न कार्य स्वप्न के उस तंत्र को कहते हैं, जिनके द्वारा स्वप्न के अव्यक्त विषय स्वप्न के व्यक्त विषय के रूप में परिवर्तित होते हैं।" इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि स्वप्न कार्य द्वारा स्वप्न के अध्ययन विषय व्यक्त विषय के रूप में रूपांतरित होते हैं तथा इस कार्य में स्वप्न के कुछ तंत्र या रचनाएँ सहयोग देते हैं।

स्वप्न तंत्र या रचनाएँ (Dream mechanisms) फ्रायड ने 'स्वप्न रचना' की परिभाषा देते हुए कहा है कि "जिन प्रक्रमों से गुप्त स्वप्न को व्यक्त स्वप्न में बदला जाता है, उन्हें स्वप्न तंत्र या स्वप्न रचना कहते हैं।" फ्रायड ने ऐसी पाँच स्वप्न रचनाओं की चर्चा की है।

(1) संघनन (Condensation) संघनन स्वप्न की उस रचना या तंत्र को कहते हैं, जिसमें व्यक्त विषय के एक ही तथ्य द्वारा गुप्त या अव्यक्त विषय के अनेक तथ्यों का प्रकाशन होता है। इस प्रकार संघनन की प्रक्रिया द्वारा स्वप्न के गुप्त विषय लघु या संक्षिप्त होकर व्यक्त विषय में परिवर्तित या रूपांतरित होते हैं। यह क्रिया तीन प्रकार की होती है।

(A) गुप्त विषय के कुछ अंश या तत्व गायब हो जाते हैं।

(B) गुप्त विषय की अनेक ग्रंथियों के आंशिक रूप ही व्यक्त विषय में रहते हैं तथा

(C) व्यक्त विषय में किसी सामान्य विशेषता वाले गुप्त अवयव या तत्व परस्पर मिलकर एक व्यक्ति या स्थान या वस्तु के रूप में प्रकट होते हैं।

मान लें, कि कोई व्यक्ति स्वप्न में एक बूढ़े व्यक्ति को देखता है, जिसकी शक्ल "क" नाम के व्यक्ति से, मूँछें